हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 03 - 09 May 2026

पर्यावरण

प्रकृति के प्रति कर्तव्य बोध

तेजोमय होगा हर पल
पूजा होगी सफल!
पितांबरी
होमकेअर डिवीजन
25g EXTRA
The Original & No.1 Brand
Pitambari
Shining Powder
Pleasant Fragrance
More Shine for 5 Metals
For Diya & lamps only
Pitambari
Deep shakti
Power of Spirituality!
दीपशक्ती तेल
शांत और
अखंड दिये के लिए
पितांबरी शायनिंग पाउडर
तांबा-पीतल के बर्तनों को
चमकाने के लिए
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999,
CRM: 022 - 6703 5564 / 5699, Toll Free: 18001031299. Visit: www.pitambari.com
CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

कैसा हो अपना पर्यावरण	डॉ. दीपक कोहली	04
पर्यावरण संरक्षण: राष्ट्रव्यापी अभियान	आलोक शर्मा	06
पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी	डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी	09
पर्यावरण के नाम पर साइकोलॉजिकल वॉरफेयर	सुर्यकांत आयरे	10
अमेरिका का खोखलापन और दिखावा	दीपक कुमार द्विवेदी	12
ट्रम्प टैरिफ और हॉर्मूज संकट का तोड़	विष्णु शर्मा	15
अमेरिकी फंडिंग से जनजाति कन्वर्जन	संजय गुप्ता	17
संघर्ष के बीच खिलता कमल	विप्लव विकास	20
गुजरात नगर निगम में भाजपा की ऐतिहासिक विजय	मृत्युंजय दीक्षित	22
लोन वुल्फ आतंक का बढ़ता संकट	अमित तिवारी	23
न्याय की 'होम डिलीवरी'	मुकेश गुप्ता	24
क्रिकेट का अंतिम रोमांचक मुकाबला	राजीव रोहीत	25
मर्चेंट नेवी साहसिक करियर	सोनाली जाधव	26
मुस्कान का अनमोल उपहार	डॉ. नीलम दुबे	27
खेल भावना, अनुशासन और राष्ट्र निर्माण का उत्सव	महेश पालीवाल	28
रवींद्रनाथ टैगोर: विश्वमानव की अमर वाणी	घनश्याम गुप्त	29

पंजीयन शुल्क

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

कैसा हो अपना पर्यावरण

यदि हम आज प्रकृति के साथ संतुलित सम्बंध स्थापित नहीं करेंगे, तो भविष्य की पीढ़ियों को गम्भीर संकटों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए पर्यावरण संरक्षण को एक सामाजिक दायित्व, नैतिक कर्तव्य और सतत विकास की आधारशिला के रूप में स्वीकार करना ही सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की कुंजी है।

कर्तव्य

डॉ. दीपक कोहली

आज का समय मानव सभ्यता के सामने खड़ी उन चुनौतियों का समय है, जो केवल वर्तमान को नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी प्रभावित करने वाली हैं। बढ़ता वैश्विक तापमान, असमय वर्षा, सूखते जलस्रोत, जहरीली होती हवा, सिकुड़ते वन और घटती जैव-विविधता यह स्पष्ट संकेत हैं कि हमारा पर्यावरण असंतुलन की गम्भीर स्थिति में पहुंच चुका है। ऐसे दौर में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारा पर्यावरण कैसा हो। यह प्रश्न केवल प्रकृति संरक्षण का नहीं बल्कि जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक स्थिरता और सभ्यता की निरंतरता से जुड़ा हुआ है।

पर्यावरण को यदि केवल हवा, पानी, मिट्टी और वृक्षों तक सीमित कर दिया जाए, तो उसकी व्यापकता को समझना कठिन होगा। वास्तव में यह एक जीवंत, जटिल और परस्पर जुड़ा हुआ तंत्र है, 'इकोसिस्टम' कहा जाता है। इस इकोसिस्टम में जिसे मानव, पशु-पक्षी, वनस्पति, सूक्ष्म जीव, नदियां, पर्वत, मिट्टी, जलवायु और ऊर्जा चक्र सभी शामिल हैं। इन सभी के बीच एक सूक्ष्म संतुलन विद्यमान रहता है। यदि किसी एक घटक में व्यवधान आता है, तो उसका प्रभाव पूरे तंत्र पर पड़ता है। यही कारण है कि पर्यावरणीय संकट कभी अकेला संकट नहीं होता बल्कि वह स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था, कृषि, जलसुरक्षा और सामाजिक जीवन, सभी को प्रभावित करता है।

एक स्वस्थ इकोसिस्टम वही है, जिसमें प्रकृति के सभी तत्व सह-अस्तित्व की भावना से जुड़े हों। घने वन वर्षा चक्र को स्थिर रखते हैं, नदियां जीवन को प्रवाहित करती हैं, उपजाऊ मिट्टी अन्न देती है, जैव-विविधता पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखती है और स्वच्छ वायु स्वास्थ्य का आधार बनती है। जब ये सभी तत्व एक-दूसरे के पूरक बनते हैं, तभी जीवन सम्भव होता है। इसलिए हमारा पर्यावरण ऐसा होना चाहिए, जहां विकास और संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित हो। आधुनिकता, उद्योग और तकनीकी प्रगति आवश्यक हैं, परंतु वे तभी सार्थक हैं, जब वे प्रकृति की कीमत पर नहीं बल्कि उसके साथ सामंजस्य में आगे बढ़ें।

आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हमने विकास को उपभोग और विस्तार के पैमाने पर मापना शुरू कर दिया है। परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का दोहन-शोषण बढ़ा है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई, भूजल

का अत्यधिक उपयोग, नदियों में प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे का प्रसार और जीव-जंतुओं के प्राकृतिक आवासों का विनाश, ये सब उस असंतुलन के लक्षण हैं, जिसे हमने स्वयं पैदा किया है। यदि यही प्रवृत्ति जारी रही, तो इकोसिस्टम की पुनर्संतुलन क्षमता कमजोर होती जाएगी और मानव जीवन अधिक संकटग्रस्त होगा।

इस संतुलन को बनाए रखने की पहली और मूल जिम्मेदारी व्यक्ति की है। पर्यावरण संरक्षण किसी दूरस्थ सरकारी योजना से नहीं बल्कि हमारे दैनिक जीवन से शुरू होता है। हम अपने घर, अपने कार्यालय, अपने मोहल्ले और अपनी आदतों के माध्यम से बदलाव ला सकते हैं। जल की बचत, बिजली का विवेकपूर्ण उपयोग, प्लास्टिक से दूरी, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता और वृक्षारोपण जैसे छोटे कदम मिलकर बड़े परिवर्तन की नींव रखते हैं। व्यक्तिगत जिम्मेदारी का अर्थ केवल व्यवहारिक परिवर्तन नहीं बल्कि सोच में बदलाव भी है। जब हम प्रकृति को संसाधन नहीं बल्कि जीवन के आधार के रूप में देखना शुरू करते हैं, तभी सच्चा परिवर्तन सम्भव होता है।

दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति समाज की है। व्यक्ति के प्रयास तब व्यापक प्रभाव डालते हैं, जब वे सामूहिक चेतना में परिवर्तित होते हैं। समाज की सहभागिता पर्यावरणीय आंदोलनों को स्थायित्व देती है। जल संरक्षण अभियान, स्वच्छता आंदोलन, सामुदायिक वृक्षारोपण, स्थानीय तालाबों का पुनर्जीवन और पर्यावरण शिक्षा जैसे प्रयास तभी सफल होते हैं, जब लोग मिलकर जिम्मेदारी निभाते हैं। भारत के इतिहास में चिपको आंदोलन इसका प्रेरक उदाहरण है, जहां ग्रामीण महिलाओं ने वृक्षों को बचाने के लिए उन्हें गले लगाया। यह केवल विरोध नहीं बल्कि प्रकृति के प्रति सामूहिक संवेदनशीलता का प्रतीक था। आज भी अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं, विद्यालय, युवा समूह और स्थानीय समुदाय पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

तीसरी और निर्णायक भूमिका सरकार की है। सरकार इस पूरी प्रक्रिया में सक्षमकर्ता होती है। वह नीतियां बनाती है, कानून लागू करती है, संसाधन उपलब्ध कराती है और दीर्घकालिक योजनाओं के माध्यम से संरक्षण के प्रयासों को दिशा देती है। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, प्रदूषण नियंत्रण के मानक तय करना, जल संरक्षण योजनाएं लागू करना, वन संरक्षण को सुदृढ़ करना और सतत विकास की नीतियों को प्राथमिकता देना, ये सभी सरकार के दायित्व हैं, पर सरकार अकेले इस चुनौती का समाधान नहीं कर सकती। यदि नागरिक सहयोग न करें और समाज भागीदारी न निभाए, तो योजनाएं अधूरी रह जाती हैं। इसलिए शासन, समाज और व्यक्ति का समन्वय अनिवार्य है।

पर्यावरण संरक्षण का वास्तविक सूत्र इसी साझेदारी में छिपा है। व्यक्ति, समाज और सरकार, ये तीनों मिलकर उस तिपाई का निर्माण करते हैं, जिस पर एक स्वस्थ इकोसिस्टम टिका है। यदि एक भी टांग कमजोर हो जाए, तो संतुलन बिखर जाता है। केवल सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं, यदि समाज उदासीन हो। केवल सामाजिक जागरूकता पर्याप्त नहीं, यदि व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन न लाए और केवल व्यक्तिगत प्रयास पर्याप्त नहीं, यदि नीतिगत समर्थन न मिले। इसलिए आवश्यक है कि तीनों स्तरों पर जिम्मेदारी और समन्वय साथ-साथ चले।

अंततः पर्यावरण संरक्षण कोई विकल्प नहीं बल्कि मानव अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है। प्रकृति की रक्षा केवल सरकारी योजनाओं या अभियानों से सम्भव नहीं बल्कि यह प्रत्येक नागरिक की जागरूकता, जिम्मेदारी और जीवनशैली से जुड़ा विषय है। जल संरक्षण, वृक्षारोपण, प्लास्टिक का सीमित उपयोग, ऊर्जा की बचत, कचरे का पुनर्चक्रण और जैव विविधता की रक्षा जैसे छोटे-छोटे कदम मिलकर बड़े परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

✦✦✦

पर्यावरण संरक्षण: राष्ट्रव्यापी अभियान

भारतीय चिंतन में नैतिकता का अर्थ केवल व्यक्ति के व्यवहार तक सीमित नहीं है, इसमें प्रकृति और सृष्टि के प्रति उत्तरदायित्व भी समाहित हैं। हमारी संस्कृति में सदैव ही प्रकृति के प्रति श्रद्धा और कर्तव्य का भाव रहा है। जीवन पद्धति और संस्कार 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को अपना पाथेय मानकर न केवल विश्व के कल्याण की कामना करते हैं बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में देखते हैं।

पंच परिवर्तन

आज संघ ने अपने पंच परिवर्तन के प्रमुख आयाम 'पर्यावरण संरक्षण' को राष्ट्रव्यापी अभियान के रूप में खड़ा किया है। संघ के आह्वान ने जनसहभागिता और सामाजिक जागरूकता से नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित किया है।

हमारे लिए पर्यावरण का संरक्षण करना केवल एक विकल्प नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति एवं पृथ्वी रूपी परिवार के प्रति महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने जैसा है। आज पर्यावरण का संकट दुनिया के सामने चुनौती के रूप में खड़ा है, जिसके दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के सांस्कृतिक आधार को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करने का काम कर रहा है। विगत 100 वर्षों से निरंतर राष्ट्र निर्माण रूपी ईश्वरीय कार्य में प्रयत्नशील राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने लाखों समर्पित स्वयंसेवकों और विभिन्न अनुषांगिक संगठनों के माध्यम से भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भारत के वैभवशाली, सुखद, समृद्ध और सम्पन्नता की नींव को मजबूत कर रहा है। संघ अपने कार्यों से समाज में सकारात्मक परिवर्तन को गति देने एवं समाज में अनुशासन व देशभक्ति के साथ 'स्व' के भाव को जगा रहा है।

100 वर्ष की संघर्षमयी, परिश्रम युक्त और राष्ट्र समर्पित यात्रा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हर परिस्थिति में जीवंत प्रस्तुत किया है। 'राष्ट्र प्रथम' के भाव को चरितार्थ करते हुए प्रकृति प्रेम व पर्यावरण संरक्षण के लिए नागरिकों में उत्तरदायित्व का न केवल बोध कराया बल्कि समाज को एकरूपता में प्रदर्शित भी किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पंच परिवर्तन के प्रमुख आयामों में से एक पर्यावरण के संरक्षण का आह्वान केवल एक विकासात्मक विषय नहीं है बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक दायित्व के स्मरण का अभियान है। पर्यावरण संरक्षण को यदि केवल नीति या कार्यक्रम के रूप में देखा जाए तो उसका प्रभाव सीमित रह जाता है, परंतु जब इसे नैतिक कर्तव्य के रूप में स्वीकार किया जाता है, तब यह नैतिक-आंदोलन का रूप ले लेता है। धर्म का एक प्रमुख आयाम यह भी है कि हम प्रकृति के संतुलन को बनाए रखें। इसी भाव के अनुरूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर्यावरण संरक्षण के प्रति नागरिकों में नैतिक कर्तव्य बोध की अलख जगा रहा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक मोहन भागवत जी कहते हैं कि हमें

आलोक शर्मा

प्रकृति को जीतना नहीं है, उसे जीवित रखना है और उससे पोषण पाते रहना है। प्रकृति का शोषण हमारी संस्कृति में नहीं है। अभी दुनिया में जीवन जीने का जो तरीका प्रचलित है, वह पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। वे कहते हैं कि भारतीय संस्कृति में जो जीने का तरीका था उसमें पेड़, पौधे, पर्वत, पहाड़, नदियां इत्यादि सभी की पूजा करना सिखाया गया था। इसे बदले हुए समय में हम भूल गए, इसीलिए आज पर्यावरण दिवस मनाना पड़ रहा है। उनका मानना है कि पेड़ों के संरक्षण के लिए, पानी का दुरुपयोग रोकने के लिए और प्लास्टिक से निर्मित वस्तुओं का कम से कम प्रयोग करने के लिए समाज जागरण की आवश्यकता है। भारतीय परंपरा में प्रकृति संरक्षण अलग से किया जाने वाला कोई काम नहीं है। हमारे लिए यह जीवन का एक हिस्सा है, जो हमारे व्यक्तिगत और समाज जीवन के हर पहलू में शामिल है।

आधुनिक जीवनशैली में असीमित उपभोग को प्रगति का प्रतीक माना जाता है, जबकि संघ का दृष्टिकोण संयमित उपभोग पर आधारित है। संघ का मानना है कि हम हजारों वर्ष से खेती करके दुनिया को अन्न उपलब्ध कराते आए हैं। बावजूद इसके आज भी हमारे यहां की भूमि उपजाऊ है। यह इस बात का प्रमाण है कि हम पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं और पर्यावरण के विकास से ही सृष्टि का विकास है।

मनुष्य के रूप में हम ही सबसे महान हैं, इस अहंकार को त्याग कर हमें पर्यावरण पर विचार करना होगा। हम अपने आचरण को बदल दें तो निश्चित ही पर्यावरण में भी स्थितियां बदलेंगी। पर्यावरण गतिविधि का काम पर्यावरण को दूषित करने वालों के आचरण को बदलना है ताकि पर्यावरण संरक्षण एक व्यक्तिगत नैतिक अनुशासन बने।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने प्रारम्भिक काल से ही 'मैं' से 'हम' की यात्रा को सार्थक किया है। राष्ट्र उत्थान और समाज कल्याण की दिशा में हर क्षण समग्रता का परिचय दिया है। पर्यावरण संकट व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक है और केवल सरकारों के माध्यम से पर्यावरण संकट को दूर नहीं किया जा सकता। इसका एक मात्र उपाय भी सामूहिक प्रयास ही हैं, सबकी भागीदारी ही हमें पर्यावरण संकट से बचा सकती है।

जब कोई व्यक्ति जल बचाता है, वृक्ष लगाता है या प्लास्टिक का उपयोग कम करता है तो वह केवल अपने लिए नहीं बल्कि पूरे समाज और आने वाली पीढ़ियों के लिए कार्य करता है। यही सामूहिकता का भाव नैतिकता को और सशक्त बनाता है।

✦✦✦

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483

भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

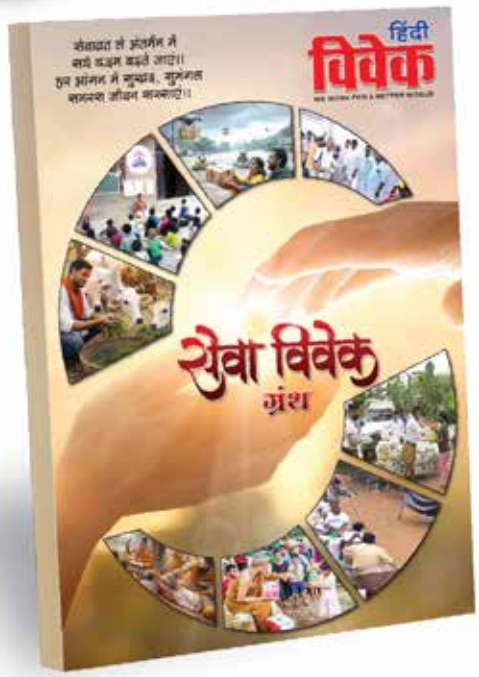

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

तेज गर्मी में पशु-पक्षियों के लिए आश्रय और दाना-पानी की व्यवस्था करना न सिर्फ सामाजिक दायित्व है बल्कि यह हमें एक 'श्रेष्ठ मनुष्य' बनाने वाला संस्कार भी है। गर्मी में जानवरों को छाया, चिड़िया को पानी और भूखे जीव को दाना देना, यही सच्चा धर्म है, यही सर्वश्रेष्ठ मानव कर्म है।

पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी

बैशाख और जेठ मास की तपती दोपहर में जहां सभी प्राणी, जीव- जंतु, थोड़ी सी छाया और दो बूंद पानी से अपने को ऊर्जावान बनाने का प्रयास करते दिखते हैं। उनमें मानव तो अपना आश्रय और जल की व्यवस्था स्वयं कर लेता है, किंतु आदिकाल से ही स्वयं की जीवन की रक्षा के साथ ही मानव का कर्तव्य अन्य प्राणियों, जीव-जंतुओं, पशु- पक्षियों की रक्षा के प्रति भी रहा है। मनुष्य केवल अपनी ही नहीं वरन पृथ्वी के समस्त जीव-जगत के साथ ही पेड़ पौधों का रक्षण करने की भी प्रेरणा अपने संस्कारों से ही पाता है।भारतीय सनातन धर्म का आधार 'वसुधैव कुटुंबकम्' रहा है, अर्थात अपने जीवन की रक्षा के साथ ही अन्य की रक्षा हेतु तत्पर रहना, प्रयास करना, न केवल श्रेष्ठ मानवीय कर्म है बल्कि इस पृथ्वी का श्रेष्ठ धर्म भी है। इसलिए भारतीय मनुष्यों ने वृक्षारोपण का संदेश दिया था। जिससे एक वृक्ष पर अनगिनत पंछियों का बसेरा, उसके फलों से पथिकों और जीवों को भोजन, उसकी जड़ों के पास यात्रियों को छाया और ठंडक मिल सके। यद्यपि आज की बदलती परिस्थिति एवं जमीन की कमी के कारण हर व्यक्ति पेड़ नहीं लगा सकते। अतः उनसे यह अपेक्षा रहती है कि पंछियों के लिए घरों के बरामदे, बालकनी और छत पर छायादार स्थान में मिट्टी के बर्तन में ताजा पानी और एक कसोरा में उनके भोजन के लिए अनाज के कुछ दाने अवश्य रखें। दो-तीन दिनों में पानी गंदा होने पर या पानी समाप्त होने पर इसे बदल दें। वैदिक साहित्य में जल को जीवन अर्थात 'जलमेव् जीवनम्' कहा गया है। वैशाख, जेठ मास में शीतल जल दान का महत्व वेदों पुराणों में भी बताया गया है। वास्तव में जल एकमात्र संसाधन ही नहीं है अपितु पेड़-पौधे, जीव-जंतुओं में प्राणियों की जीवन रक्षा का सर्वोत्तम साधन है। मूक प्राणियों के जीवन रक्षा हेतु अन्य जल की व्यवस्था करने से मात्र मानवीय धर्म और श्रेष्ठ कर्म का ही प्रतिपालन नहीं होता अपितु कुंडली के साथ ग्रहदोष यथा राहु, केतु, शनि आदि का भी निवारण होता है। ग्रीष्म ऋतु में धरती पर बढ़ते तापमान के कारण पशु-पक्षियों की भोजन व्यवस्था और संतुलित हो जाती है। मैदान सूखे, जंगल बेजान और गर्म हो जाने से छोटे जीवों की रक्षा कठिन होती है। ऐसे में उनके लिए घर के एक खुले स्थान पर जौ, बाजरा, गेहूं, ककुनी के दाने रखकर उनके भोजन, पीने के लिए जल की व्यवस्था कर के उनके प्राणों की रक्षा हेतु प्रयास किया जा सकता है।

यजुर्वेद (11.83) में इस सम्बंध में एक युक्ति मिलती है

ऊर्ज न धेहि द्विपदे चतुष्पदे

इसमें द्विपद (पक्षियों और मनुष्यों) और चतुष्पदों, (पशुओं) दोनों हेतु स्वास्थ्य और पानी की रक्षा की प्रार्थना मिलती है।

प्राचीन काल में ग्रीष्म ऋतु में मूक पशुओ हेतु जल व्यवस्था के लिए कृत्रिम जलाशय, तालाबों का निर्माण किया जाता था, जो वर्षा ऋतु में जल से भरकर गृहस्थों के दैनिक कार्य तथा कृषकों के लिए खेतों की सिंचाई काम हेतु आते थे। ग्रीष्म ऋतु में प्राणियों हेतु जल व्यवस्था पर्यावरण संरक्षण की भी प्रेरणा रही है। ज्ञातव्य है कि यह मात्र जीव सेवा ही नहीं, वरन् कर्म से करुणा का साक्षात्कार भी है। पशु-पक्षियों के लिए पानी व छाया की व्यवस्था करना मानव की नैतिक जिम्मेदारी भी है, जिसे निभाकर मानव को अपार संतुष्टि एवं खुशी मिलती है।

डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी

✦✦✦

पर्यावरण के नाम पर साइकोलॉजिकल वॉरफेयर

नैरेटिव

सुर्यकांत आयरे

आजकल सोशल मीडिया पर भारत की गर्मी, इन्फ्रास्ट्रक्चर और विकास को लेकर एक संगठित नकारात्मक कथा फैलाई जा रही है। असल में यह 'साइकोलॉजिकल वॉरफेयर' है, जिसमें 'साउथ एशिया' लेबल वाले विदेशी अकाउंट्स आधी-अधूरी जानकारियों से भारतीयों को उकसा रहे हैं।

आजकल सोशल मीडिया पर भारत की गर्मी और यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर एक अजीब सी बेचैनी फैलाई जा रही है। चिलचिलाती धूप का लाभ उठाकर कुछ 'एजेंडाधारी' अकाउंट्स आपको यह समझाने में जुटे हैं कि भारत रहने लायक नहीं बचा और इसका कारण हमारा तकनीकी विकास है, परंतु सच ठीक इसके उलट है। वैज्ञानिक डेटा साक्षी है कि जहां पूरी दुनिया 1 से 1.5 डिग्री प्रति दशक की दर से भट्टी की तरह तप रही है, वहीं भारत ने अपनी जलवायु को इतने अच्छे से सम्भाला है कि हमारे यहां तापमान बढ़ने की दर दुनिया में सबसे कम 0.5 से 1 डिग्री रही है।

इतना ही नहीं, यूएन की जीएफआरए - 2025 की सैटेलाइट रिपोर्ट चीख-चीख कर कह रही है कि पिछले एक दशक में भारत ने अपने वन क्षेत्र और शहरों में हरियाली को बड़े स्तर पर बढ़ाया है। साथ ही, हमारी बढ़ती आर्थिक शक्ति के साथ हमने जीवों के संरक्षण में भी दुनिया के सामने उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आज जब विकसित देश अपनी जनसंख्या बचाने के लिए जंगली जानवरों को मारने का रास्ता चुनते हैं, तब भारत ने अपने शेरों, बाघों और गैंडों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि की है, तो फिर यह अचानक नकारात्मकता का माहौल क्यों?

वास्तव में यह एक सोची-समझी 'साइकोलॉजिकल वॉरफेयर' है। सबसे पहले, 'साउथ एशिया' नाम वाला एक अकाउंट 'एपिक मेपस्' दोपहर के समय भारत का एक नक्शा पोस्ट

करता है (उस समय अफ्रीका में सुबह और पूर्वी एशिया में शाम होती है)। वह भारतीयों को यह कहकर उकसाता है कि सिर्फ भारत ही क्यों?,

ताकि ऐसा लगे कि पूरी दुनिया में भारत ही सबसे गर्म जगह है। यह सब ठीक उन्हीं दिनों किया जाता है जब भारत में प्राकृतिक लू चल रही होती है- जो कि दशकों से होता आ रहा है। इसका उद्देश्य लोगों की शारीरिक परेशानी का लाभ उठाकर उन्हें यह महसूस कराना है कि हां, यह तो सही कह रहा है, भारत में बहुत गर्मी है।

इसके बाद, 'साउथ एशिया' वाला ही एक दूसरा अकाउंट 'ठंडी कॉफी' किसी अभिनेत्री की फोटो लगाकर पोस्ट करता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि 'हमारी' सरकार डेटा सेंटर बना रही है। ऐसा होते फिर कई भारतीय उसी बात को सच मानकर रीपोस्ट करने लगते हैं। अपने ही देश को अस्थिर करने और विकास व तकनीकी प्रगति को बर्बाद करने के इस खेल का मोहरा मत बनिए। जब तक हम पिछड़े थे, दुनिया हमें गरीब और सुस्त कहकर चिढ़ाती थी। अब जब भारत सेमीकंडक्टर, एआई, डेटा सेंटर और मैन्युफैक्चरिंग में ग्लोबल सुपरपावर बनने की दहलीज पर खड़ा है, तो पर्यावरण के नाम पर हमें डराया जा रहा है ताकि हम स्वयं अपनी प्रगति के पहिए रोक दें। विदेशी अकाउंट्स भारत की गर्मी का आधा-अधूरा सच दिखाकर आपको अपनी ही जड़ों और अपनी ही सरकार के विरुद्ध खड़ा करना चाहते हैं। याद रखिए, ये वही लोग हैं जो भारत के आत्मनिर्भर बनने से घबराते हैं। सच तो यह है कि भारत की गर्मी आज की नहीं, सदियों पुरानी है। हमारे प्राचीन साहित्य में ऐसी तपती गर्मियों का वर्णन मिलता है जहां झुलसती धरती और भीषण लू का सामना करना सेनाओं तक के लिए चुनौतीपूर्ण होता था। यहां तक कि 1900 के शुरुआती दौर में, जब न गाड़ियां थीं और न बिजली, तब भी ब्रिटिश भारत के कई शहरों में तापमान 40 डिग्री के पार जाना एक सामान्य बात थी। आज भी रेगिस्तानी क्षेत्रों में तापमान 50 डिग्री तक पहुंच जाता है, जो हमारे भूगोल का हिस्सा है, विकास की भेंट चढ़ते किसी नए विनाश का संकेत नहीं।

अपनी प्रगति को किसी प्रोपेगेंडा की भेंट न चढ़ने दें। हम एक घनी जनसंख्या वाला देश होने के बाद भी पेरिस जलवायु लक्ष्यों और पर्यावरण संरक्षण में दुनिया के 'चैंपियन' बनकर उभरे हैं। यह एक 'इन्फॉर्मेशन वॉर' है। जब तक हम पिछड़े थे, वे हमें कोसते थे, अब जब हम आगे बढ़ रहे हैं, तो वे जलवायु के नाम पर हमें डरा रहे हैं। अपनी ही प्रगति के विरुद्ध मोहरा न बनें।

अमेरिका का खोखलापन और दिखावा

सच बात तो यह है कि आज अमेरिका एक ऐसे डूबते हुए सूरज की तरह लगता है जिसकी चमक तो दूर से दिखाई देती है, किंतु उसके भीतर की थकान और असंतुलन अब छिपे नहीं हैं। आर्थिक खाई बढ़ रही है, समाज बंटा हुआ है, हिंसा और असुरक्षा बढ़ रही है और व्यवस्था भीतर से कमजोर पड़ती जा रही है।

दीपक कुमार द्विवेदी

पतन

24 अप्रैल 2026 को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का एक वक्तव्य सुनने के बाद मन में स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उठा कि क्या सच में उन्हें दुनिया की सही तस्वीर दिख रही है या वे केवल अपने ही दृष्टिकोण के दायरे में सीमित होकर बोल रहे हैं? भारत जैसे देश को नरक कहना कोई साधारण बात नहीं है। यह केवल शब्द नहीं बल्कि सोच का परिचय है और जब यह बात दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति माने जाने वाले देश के राष्ट्रपति की ओर से आती है, तब इसे गम्भीरता से समझना आवश्यक हो जाता है।

सबसे पहले अमेरिका की अपनी स्थिति पर दृष्टि डालना आवश्यक है। आज अमेरिका का राष्ट्रीय कर्ज लगभग 34 से 39 ट्रिलियन डॉलर के बीच पहुंच चुका है। यह उसके पूरे सकल घरेलू उत्पाद से भी ज्यादा है। उपभोक्ता कर्ज 18 ट्रिलियन डॉलर से ऊपर जा चुका है। इसका सीधा अर्थ है कि वहां का समाज अपनी आय से ज्यादा खर्च कर रहा है और इस अंतर को कर्ज के सहारे पूरा कर रहा है। यह कोई स्वस्थ आर्थिक मॉडल नहीं माना जाता। अब जरा समाज की हालत देखिए। गन कल्चर अमेरिका की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। Gun Violence Archive के आंकड़ों के अनुसार केवल 2023 में ही 43,000 से ज्यादा लोगों की मौत गोलीबारी से हुई। हर वर्ष यह आंकड़ा 40,000 के आसपास बना हुआ है। यह केवल अपराध नहीं बल्कि समाज के भीतर गहरे असंतुलन का संकेत है। परिवार व्यवस्था भी वहां तेजी से टूट रही है। Pew Research Center के अनुसार लगभग 23 से 25 प्रतिशत बच्चे ऐसे परिवारों में पल रहे हैं जहां केवल एक ही अभिभावक है। तलाक की दर लम्बे समय से ऊंची बनी हुई है। इसका असर आने वाली पीढ़ियों पर साफ दिख रहा है। मानसिक तनाव, अकेलापन और असुरक्षा वहां की बड़ी समस्याएं बन चुकी हैं।

महिला सुरक्षा की बात करें तो RAINN जैसी संस्थाओं के अनुसार हर वर्ष लाखों महिलाएं यौन अपराधों का सामना करती हैं। इनमें से बहुत सारे मामलों की रिपोर्ट तक नहीं होती। यह उस समाज की सच्चाई है जिसे प्राय: दुनिया के सामने आदर्श के रूप में पेश किया जाता है।

जिस देश की शिक्षा व्यवस्था स्वयं गहरे वैचारिक संकट से गुजर रही हो, उसका भारत को नरक कहना अपने आप में विडम्बना है। आज अमेरिका के अनेक विद्यालय और विश्वविद्यालय शिक्षा के केंद्र कम और वामपंथी प्रयोगों की प्रयोगशाला अधिक बनते जा रहे हैं। वहां शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान, चरित्र और संतुलन देना नहीं रह गया बल्कि सामाजिक और वैचारिक प्रयोगों को लागू करना प्रमुख बनता जा रहा है।

कई स्थानों पर बच्चों को बहुत कम आयु में ही यौन शिक्षा और LGBTQ से जुड़े विषय पढ़ाए जा रहे हैं, जिन पर स्वयं अमेरिका के भीतर भी व्यापक असहमति और बहस है। इसके

साथ ही क्रिटिकल रेस थ्योरी और डीईआई (Diversity, Equity, Inclusion) जैसे ढांचों के माध्यम से समाज को शोषक और शोषित के दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति विकसित की जा रही है। इससे शिक्षा का संतुलन बिगड़ता है और बच्चों के मन में विभाजनकारी सोच गहराने लगती है।

नस्लीय विभाजन आज भी अमेरिका के समाज में जड़ जमाए बैठा है और यह कहना गलत नहीं होगा कि ब्लैक बनाम व्हाइट का संघर्ष आज भी वहां की वास्तविकता है। जिस देश ने स्वयं को बराबरी और स्वतंत्रता का प्रतीक बताया, वहीं आज भी अश्वेत समुदाय आर्थिक और सामाजिक रूप से पीछे धकेला हुआ दिखाई देता है। अमेरिका स्वयं को विकसित और समृद्ध राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है, पर उसकी इस चमक के पीछे एक ऐसी वास्तविकता भी है जिसे प्राय: खुलकर स्वीकार नहीं किया जाता। गरीबी वहां उपस्थित है और वह भी साधारण नहीं बल्कि गहरी और संरचनात्मक है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में गरीबी दर लगभग 11 से 12 प्रतिशत के बीच रहती है, जिसका अर्थ है कि करीब 3.5 से 4 करोड़ लोग आज भी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह संख्या किसी छोटे देश की कुल जनसंख्या के बराबर है, किंतु इस पर उतनी चर्चा नहीं होती जितनी होनी चाहिए।

स्थिति तब और स्पष्ट हो जाती है जब इसे नस्ल के आधार पर देखा जाता है। अश्वेत समुदाय में गरीबी दर लगभग 18 से 20 प्रतिशत तक पहुंच जाती है, जबकि श्वेत समुदाय में यह लगभग 8 से 10 प्रतिशत रहती है। इसका सीधा अर्थ है कि अमेरिका में अवसर और संसाधन समान रूप से वितरित नहीं हैं। ब्लैक बनाम व्हाइट का विभाजन केवल सामाजिक नहीं बल्कि आर्थिक स्तर पर भी गहराई से बना हुआ है। यही कारण है कि समाज के भीतर एक स्थाई असंतोष और वर्ग संघर्ष दिखाई देता है। एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अमेरिका में वर्किंग पुअर यानी काम करने के बाद भी गरीब रहने वाले लोगों की संख्या भी बहुत अधिक है। लाखों लोग नौकरी करते हुए भी अपनी बुनियादी आवश्यकताओं जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास को पूरा नहीं कर पाते। बड़े शहरों में महंगाई इतनी अधिक है कि सामान्य आय वाला व्यक्ति भी आर्थिक दबाव में रहता है। यही वह वास्तविकता है जिसे अनदेखा कर अमेरिका भारत जैसे देश को नरक कहता है। सच यह है कि जो समाज स्वयं भीतर से असमानता, विभाजन और असंतुलन से जूझ रहा हो, उसे पहले अपनी स्थिति पर दृष्टि डालनी चाहिए, न कि दूसरों पर टिप्पणी करनी चाहिए।

✦✦✦

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्

दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

सोने तारण कर्ज

जलद कर्ज

कमी प्रक्रिया शुल्क

व्याजदर

९.५०%* वार्षिक

* अटी व शर्ती लागू

TOLL FREE: 1800 233 1919 kalyanjanata.in KJSBank

ट्रम्प टैरिफ और हॉर्मूज संकट का तोड़

विष्णु शर्मा

भारत ने हाल ही में न्यूजीलैंड, दक्षिण कोरिया, यूरोपियन यूनियन, ब्रिटेन और ईएफटीए जैसे प्रमुख देशों के साथ ऐतिहासिक व्यापार समझौते करके वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक बड़ा कदम है।

हाल ही में पाकिस्तान के पेट्रोलियम मंत्री अली मलिक का एक वक्तव्य बहुत चर्चा में रहा। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि हमारे पास एक दिन का तेल रिजर्व भी नहीं, जबकि भारत जब चाहे, एक संकेत पर कितना भी तेल प्राप्त कर सकता है। यह स्विकारोक्ति उस पाकिस्तान ने दिया, जो मुस्लिम देश होने के नाते तेल समृद्ध खाड़ी देशों से घिरा है और जिसकी अमेरिका, चीन, रूस से मित्रता है। फिर भी उसकी स्थिति यह है। भारत पर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा और इसका कारण है मोदी सरकार की वे रणनीतियां जो 2014 से लगातार देश को आत्मनिर्भर बनाने में जुटी हैं।

भारत की निर्भरता के प्रमुख क्षेत्र

भारत की पूर्ण आत्मनिर्भरता में सबसे बड़ी बाधा है क्रूड ऑयल और पेट्रोलियम उत्पाद। हम दुनिया के तीसरे सबसे बड़े तेल आयातक देश हैं, 85-87% तेल बाहर से आता है। इसमें 30-37% रूस से, 18-23% इराक से और शेष सऊदी अरब, यूएई, अमेरिका से। एलपीजी (80-85%) और एलएनजी के लिए हम कतर समेत खाड़ी देशों पर निर्भर हैं। इसी तरह एंटीबायोटिक्स, विटामिन, सौर ऊर्जा उपकरण, लिथियम बैटरी, सेमीकंडक्टर, फर्टिलाइजर, खाद्य

तेल और मेडिकल उपकरणों के लिए हमारी चीन और अन्य देशों पर काफी निर्भरता है। रक्षा क्षेत्र में यह निर्भरता 65-70% तक घटी है, लेकिन अभी भी काम बाकी है।

मोदी सरकार की रणनीतिः आंतरिक तैयारी

2014 से ही 'मेक इन इंडिया' अभियान के अंतर्गत भारत ने अपनी शोधन क्षमता बढ़ाई है। रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार में 53 लाख मीट्रिक टन का भंडारण बन चुका है और 65 लाख मीट्रिक टन निर्माणाधीन है। एचईएलपी 2016 और ओएएलपी जैसी नीतियों ने 100% विदेशी निवेश का रास्ता खोला। इसी तरह पीएलआई योजना, सेमीकंडक्टर मिशन और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में भारत ने बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। मोबाइल का आयात शून्य हो गया, निर्यात 127 गुना बढ़ा, रक्षा उत्पादन 1.5 लाख करोड़ पार कर गया और निर्यात 25 हजार करोड़ तक पहुंच गया।

विदेश नीतिः आपूर्ति श्रृंखला में विविधता

सबसे बड़ी चतुराई मोदी सरकार ने विदेशी समझौतों में दिखाई। भारत का ऊर्जा आयात आधार 27 से बढ़कर 41 देशों तक पहुंच गया है। अब हम सिर्फ खाड़ी पर नहीं बल्कि रूस, अमेरिका, वेनेजुएला, अल्जीरिया, अंगोला, अर्जेंटीना और ओमान से भी तेल खरीद रहे हैं। इससे हॉर्मूज जैसे संकट के समय एक विकल्प हमेशा तैयार रहता है।

हाल के वर्षों में भारत ने कई ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) किए हैं। 27 देशों वाली यूरोपियन यूनियन, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड, ओमान और ईएफटीए (यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन) के साथ समझौते हुए हैं। विशेष रूप से भारत-न्यूजीलैंड और भारत-दक्षिण कोरिया व्यापार समझौते ने दिशा तय की है।

इन समझौतों से भारत को क्या मिला?

न्यूजीलैंड ने 20 बिलियन डॉलर और ईएफटीए- ने 100 बिलियन डॉलर के निवेश का वादा किया है, जिससे 10 लाख नौकरियां बनेंगी। यूरोपियन यूनियन के साथ समझौते से भारतीय टेक्सटाइल, लेदर, जेम्स एंड ज्वेलरी पर 12-17% शुल्क तुरंत शून्य हो गया। टेक्सटाइल निर्यात 7 बिलियन डॉलर से बढ़कर 30-40 बिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है।

इन समझौतों में टेक्नोलॉजी ट्रांसफर को अनिवार्य बनाया गया है। न्यूजीलैंड हर साल 5,000 भारतीय पेशेवरों (आईटी, हेल्थकेयर, इंजीनियरिंग, आयुष, योग) को अस्थाई वीजा देगा। कृषि और डेयरी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को कोई हानि नहीं पहुंचाया गया।

ट्रम्प टैरिफ और हॉर्मूज संकट का तोड़

अमेरिका के लगातार बदलते टैरिफ (ट्रम्प टैरिफ) का असर कम करने के लिए भारत ने यूरोपीय देशों से समझौते कर वैकल्पिक बाजार तैयार कर लिए हैं। वहीं, ईरान युद्ध और हॉर्मूज संकट के समय तेल आपूर्ति में व्यवधान न हो, इसके लिए भारत ने रूस, अमेरिका, वेनेजुएला जैसे दूरस्थ देशों से तेल खरीदना शुरू कर दिया। यही बहुध्रुवीय विश्व में संतुलन बनाकर चलने की नीति का परिणाम है।

विकसित भारत की ओर

मोदी सरकार ने न सिर्फ संकटों से बचाव के उपाय किए बल्कि दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता की नींव रखी। 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस', गलत कानूनों को हटाना, बुनियादी ढांचे का विस्तार - इन सबने भारत को वैश्विक मंच पर सम्मान दिलाया है। आज कोई भी देश भारत को अनदेखा नहीं कर सकता। फिर भी बदलते हुए विश्व में नए संकट आते रहेंगे। आवश्यकता है रणनीतिक समझौतों के जरिए वैकल्पिक रास्ते ढूंढते रहने की और इस मोर्चे पर मोदी सरकार ने बिना किसी को नाराज किए अहम उपलब्धियां प्राप्त की हैं। यही विकसित भारत की असली तस्वीर है।

मोदी सरकार ने 'मेक इन इंडिया', पीएलआई योजना, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार और बहुध्रुवीय विदेश नीति से ऐसी नींव रखी है, जिस पर खड़ा भारत अब किसी वैश्विक संकट से विचलित नहीं होता। ✦✦✦

द टिमोथी इनिशिएटिव नामक विदेशी संस्था हर गांव में एक चर्च स्थापित करने के लक्ष्य के साथ भारत में काम कर रही है। देश में खासतौर पर छत्तीसगढ़ और माओवादी हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों में इसकी गतिविधियां पहले भी चर्चा और विवाद का विषय रही हैं और अब इन्हीं पहलुओं को लेकर ईडी की जांच और तेज हो गई है।

अमेरिकी फंडिंग से जनजाति कन्वर्जन

भारत के नक्सल प्रभावित और सामाजिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी फंडिंग के जरिए ईसाई कन्वर्जन की चर्च पोषित कथित गतिविधियों के संचालन का मुद्दा एक बार फिर राष्ट्रीय बहस के केंद्र में आ गया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा की गई व्यापक जांच और छापेमारी ने जिस संगठित नेटवर्क की ओर संकेत किया है, उसने नागरिकों के संविधानिक अधिकारों और राज्य के कानून पर गम्भीर प्रश्न खड़े कर दिए हैं।

इस पूरे मामले का केंद्र है अमेरिकी मिशनरी संस्था द टिमोथी इनिशिएटिव (टीटीआई), जिसके बारे में जांच एजेंसियों का दावा है कि यह भारत में बिना वैध पंजीकरण के बड़े पैमाने पर विदेशी धन (डॉलर) का उपयोग कर धार्मिक प्रचार-प्रसार के साथ चर्च गतिविधियां कराते हुए मतांतरण करने में संलग्न थी।

ईडी की कार्रवाई: 95 करोड़ का संदिग्ध नेटवर्क

ईडी की जांच के अनुसार नवम्बर 2025 से अप्रैल 2026 के बीच लगभग 95 करोड़ रुपये विदेशी डेबिट कार्डों के माध्यम से भारत में लाए गए। यानी कि सिर्फ बीते 4 माह में यह रकम पारम्परिक बैंकिंग और नियामकीय चैनलों को दरकिनार कर एटीएम से निकाली गई। 18 और 19 अप्रैल 2026 को देश के विभिन्न राज्यों में चलाए गए सर्च ऑपरेशन में 25 विदेशी डेबिट कार्ड, 40 लाख रुपये नकद, डिजिटल उपकरण और कई आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए गए हैं। उक्त मामले में विदेशी नागरिक मीकाह मार्क की गिरफ्तारी ने पूरे नेटवर्क की परतें खोल दीं हैं। उसके पास से 24 विदेशी डेबिट कार्ड बरामद हुए, जिनका उपयोग भारत में लगातार नकदी निकालने के लिए किया जा रहा था। जांच एजेंसियों का मानना है कि यह सिर्फ वित्तीय अनियमितता का मामला नहीं है, एक संगठित मनी लॉन्ड्रिंग और प्रभाव विस्तार का मामला हो सकता है।

संजय गुप्ता

कन्वर्जन के लिए जनजातीय क्षेत्र को बनाया लक्ष्य

छत्तीसगढ़ के बस्तर और धमतरी जैसे क्षेत्र, जोकि पहले से ही माओवादी हिंसा से प्रभावित रहे हैं, इस नेटवर्क के लिए प्रमुख लक्ष्य बताए जा रहे हैं। जांच में सामने आया है कि लगभग 6.5 करोड़ रुपये केवल इन क्षेत्रों में खर्च किए जा चुके हैं। ईडी की जांच में यह आशंका जताई गई है कि इन पैसों का उपयोग ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार और नए चर्च स्थापित करने के साथ कन्वर्जन के लिए किया जा रहा था।

इस सम्बंध में इडी ने जारी अपने पत्र में बताया कि ईडी के मुख्यालय, नई दिल्ली ने 18 और 19 अप्रैल, 2026 को कई राज्यों में छह जगहों पर तलाशी अभियान चलाया। यह तलाशी अभियान विदेशी बैंक डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करके, रेगुलेटरी चैनलों को दरकिनार करते हुए, संदिग्ध रूप से पैसे निकालने और उनका इस्तेमाल करने के मामले से जुड़ा है। यह जांच भारत में द टिमोथी इनिशिएटिव (टीटीआई) नाम से चलने वाले एक आंदोलन और उससे जुड़े

लोगों की गतिविधियों से सम्बंधित है। तलाशी अभियान के दौरान कई आपत्तिजनक दस्तावेज, डिजिटल डिवाइस, 25 विदेशी बैंक डेबिट कार्ड और 40 लाख रुपये की नकदी बरामद कर जब्त की गई। यहीं से यह मामला कानूनी और संवैधानिक बहस में भी प्रवेश कर जाता है क्योंकि छत्तीसगढ़ राज्य में धर्म स्वतंत्रता कानून लागू है। जिसमें साफ कहा गया है कि किसी व्यक्ति का धर्म परिवर्तन बल, प्रलोभन या कपट से नहीं कराया जा सकता। धर्म परिवर्तन से पहले सम्बंधित जिला मजिस्ट्रेट को सूचना देना आवश्यक है। उल्लंघन करने पर कारावास और जुर्माना दोनों का प्रावधान है। अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के मामलों में सजा और कठोर हो जाती है। इस कानून का उद्देश्य धर्म की स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए दुरुपयोग को रोकना है।

एफसीआरए और विदेशी फंडिंग का प्रश्न

उल्लेखनीय है कि यह पूरा मामला केवल धर्मांतरण तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें फॉरेन कंट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट (एफसीआरए) का उल्लंघन भी शामिल है। जांच में सामने आया है कि 'द टिमोथी इनिशिएटिव' भारत में एफसीआरए के अंतर्गत पंजीकृत नहीं है, फिर भी विदेशी धन का उपयोग किया जा रहा था। एफसीआरए के अनुसार कोई भी संस्था विदेशी धन तभी प्राप्त कर सकती है जब वह पंजीकृत हो, जिसमें कि धन का उपयोग केवल घोषित उद्देश्यों के लिए ही किया जा सकता है। फिलहाल ईडी इस मामले को मनी लॉन्ड्रिंग के एंगल से भी देख रही है। विदेशी डेबिट कार्ड के जरिए नकदी निकालना, बैंकिंग सिस्टम को बायपास करना, डिजिटल अकाउंटिंग प्लेटफॉर्म का विदेश से संचालन, ये सभी संकेत एक संगठित वित्तीय नेटवर्क की ओर संकेत करते हैं। ईडी अब इस पूरे सिंडिकेट के गहरे नेटवर्क की परतें खोलने में जुटी है।

यह पता लगाया जा रहा है कि इसके तार किन-किन स्थानों तक फैले हैं और प्रदेश में इसके स्थानीय सहयोगी कौन-कौन हैं। जांच में सामने आया है कि इस पूरे तंत्र को संचालित करने के लिए विदेश से नियंत्रित एक अत्याधुनिक ऑनलाइन बिलिंग और अकाउंटिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जा रहा था। अब तक इतना ही सामने आ सका है कि अवैध रूप से निकाली गई धनराशि का इस्तेमाल द टिमोथी इनिशिएटिव नामक विदेशी संस्था चर्च पोषित गतिविधियों के लिए ही कर रही थी। यह संगठन ईसाई धर्म के आक्रामक प्रचार-प्रसार में सक्रिय है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य बड़े पैमाने पर शिष्य तैयार करना, पादरियों को प्रशिक्षित करना और नए चर्चों की स्थापना करना है।

✦✦✦

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT™

केसर तिलक-एक अज्ञात रहस्य

केसर तिलक

केसर तिलक आध्यात्मिकता, परम्परा और स्वास्थ्य का एक सुंदर मिश्रण है। यह शुद्ध और पवित्र गंगाजल के साथ शुद्ध केसर से बना है। तिलक आंतरित ऊर्जा को जाग्रत करने, मन की रक्षा करने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है।

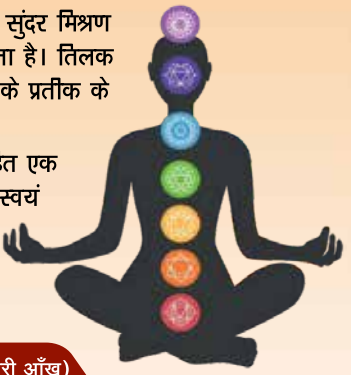

माथे, गले और नाभि पर केसर तिलक लगाना आयुर्वेद और आध्यात्मिक परम्पराओं में निहित एक प्राचीन प्रथा है। प्रत्येक बिंदू को शरीर में एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र माना जाता है और केसर स्वयं औषधीय और आध्यात्मिक महत्व रखता है। प्रत्येक क्षेत्र के लाभ इस प्रकार हैं-

केसर तिलक के अद्भुत लाभ

1. माथा आज्ञा चक्र (तीसरी आँख)
- अंतर्ज्ञान, एकाग्रता और बुद्धि का केंद्र
- ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान शक्ति बढ़ाता है

2. कान
- सतर्कता, जागरुकता और ग्रहणशीलता का प्रतीक
- कानों के पास केसर तिलक लगाने से श्रवण-एकाग्रता और संतुलन बढ़ता है

3. कंठ-विशुद्धि चक्र
- संवाद कौशल्य, आत्मविश्वास और स्व-अभिव्यक्ति को बढ़ाता है
- स्पष्ट संवाद, आंतरिक सत्य और आत्मविश्वास को सशक्त करता है

4. नाभि
- नाभि को शरीर का ऊर्जा केंद्र माना जाता है
- यहाँ केसर तिलक लगाने से शरीर को पोषण मिलता है, पचनशक्ति बढ़ाता है और आंतरिक अंगों की रक्षा होती है

ज्योतिष के अनुसार, केसर तिलक बृहस्पति (ज्ञान, धन, आध्यात्मिकता), बुध (बुद्धि, वित्त, संचार), केतु (बोध, अंतर्ज्ञान, शांति) और मंगल (साहस, शक्ति) की ऊर्जा को संतुलित करता है। प्रसिद्ध लाल किताब में केसर और केसर तिलक से संबंधित अनेक उपाय बताए गए हैं।

लगातार तीन से छह महीनों तक केसर तिलक लगाने से जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं और यह समृद्धि की सिद्ध कुंजी है। केसर तिलक से अपने दिन की शुरुआत करें।

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

विप्लव विकास

पश्चिम बंगाल के पुनरुत्थान का यह नया अध्याय न केवल इस प्रदेश की तस्वीर बदलेगा बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में भी एक बड़े संतुलन का आधार बनेगा। कमल का खिलना अब केवल सम्भावना नहीं बल्कि पश्चिम बंगाल की जनता का वह संकल्प है जो मतगणना के दिन धरातल पर उतरेगा।

संघर्ष के बीच खिलता कमल

पश्चिम बंगाल की राजनीतिक धरा पर इस बार जो हलचल दिख रही है, वह केवल सत्ता के हस्तांतरण का संकेत नहीं बल्कि एक गहरे सामाजिक और वैचारिक मंथन का परिणाम है। दशकों तक जिस प्रदेश ने वामपंथ और फिर तृणमूल कांग्रेस की जड़ें जमाए रखीं, आज वहां की गलियों और चौराहों पर 'परिवर्तन' शब्द का एक नया व्याकरण लिखा जा रहा है। चुनावी सर्वेक्षण भले ही आंकड़ों की बाजीगरी में कांटे की टक्कर का आभास करा रहे हों, लेकिन जब हम कोलकाता के उत्तरी छोर से लेकर सुदूर उत्तर बंगाल और जंगलमहल की खाक छानते हैं तो भावनाओं और वास्तविकताओं के बीच का अंतर स्पष्ट होने लगता है।

पश्चिम बंगाल का यह चुनाव केवल रैलियों की भीड़ तक सीमित नहीं है बल्कि यह उस मूक जनादेश की ओर बढ़ रहा है जो शोर कम और काम अधिक करने में विश्वास रखता है। जनता के मूड को समझने के लिए केवल जनसभाओं को देखना पर्याप्त नहीं है बल्कि उन बंद घरों की चर्चाओं को सुनना होगा जहां अब लोग बिना किसी भय के विकल्प पर बात कर रहे हैं। जमीनी वास्तविकता का सबसे बड़ा प्रमाण बूथ स्तर के समीकरणों में बदलाव है, जहां भाजपा के संगठनात्मक ढांचे ने उस अभेद्य दुर्ग में सेंध लगा दी है जो कभी अजेय माना जाता था। ग्रामीण बंगाल में जो डर की दीवार थी, वह अब ढहती दिखाई दे रही है और लोग अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति अधिक मुखर हुए हैं।

इस बार का चुनावी परिदृश्य पिछले एक दशक के चुनावों से मौलिक रूप से भिन्न है। पश्चिम बंगाल की जनता अब केवल लोक-लुभावन योजनाओं पर नहीं बल्कि 'SIR' (Security, Infrastructure, and Reliability) के त्रिकोण पर विचार कर रही है। सुरक्षा की भूख इस प्रदेश में सबसे प्रबल है क्योंकि राजनीतिक हिंसा के इतिहास ने आम नागरिक के मन में एक गहरा घाव छोड़ा है। आधारभूत संरचना का अभाव और रोजगार के लिए पलायन ने युवाओं के मन में वर्तमान व्यवस्था के प्रति एक वितृष्णा पैदा की है। यही कारण है कि पश्चिम बंगाल का युवा अब अपनी जड़ों से जुड़े रहकर वैश्विक अवसर चाहता है और उसे लगता है कि केंद्र एवं राज्य में एक ही विचारधारा की सरकार होने से राज्य की आर्थिक नियति बदल सकती है। यह आकांक्षा ही वह 'अंडरकरंट' है जिसे बड़े-बड़े विश्लेषक भांपने में प्राय: चूक कर जाते हैं। युवाओं का यह वर्ग केवल मतदाता नहीं है बल्कि वह अपने परिवार के भीतर भी परिवर्तन का एक मजबूत वाहक बनकर उभरा है। वे अब उस तुष्टीकरण की राजनीति को नकार रहे हैं जिसने राज्य के मूल हितों को पीछे धकेल दिया है।

पश्चिम बंगाल में इस बार का सबसे बड़ा और निर्णायक कारक मतों की गणना और उस दौरान रहने वाली पारदर्शिता होने वाली है। पिछले 2021 के विधानसभा चुनाव के अनुभवों ने यह कड़वी सीख दी है कि चुनावी मुकाबला केवल मतदान के दिन तक सीमित नहीं होता बल्कि मतगणना की मेज पर अंतिम परिणाम आने तक जारी रहता है। पिछली बार जिस तरह से मतगणना के समय कुछ स्थानों पर अव्यवस्था का लाभ उठाकर 'खेला' करने के आरोप लगे थे, उसने चुनावी शुचिता पर गहरे प्रश्न खड़े किए थे। हालांकि 2026 के इस महासमर में परिस्थितियां भिन्न हैं। चुनाव आयोग इस बार पूरी तरह से 'फ्री, फेयर एंड फीयरलेस' चुनाव प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्ध है और केंद्रीय बलों की तैनाती ने भी जनता में विश्वास भरा है। इस बार इस बात की सम्भावना बहुत ही कम है कि किसी भी प्रकार की धांधली या बाहरी हस्तक्षेप को जगह मिले। निर्णायक मोड़ यही होगा कि भाजपा के काउंटिंग एजेंट अंतिम समय तक मतगणना केंद्रों पर डटे रहें और हर राउंड की गिनती पर कड़ी दृष्टि रखें। यदि मतगणना की प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष रही और एजेंटों ने मुस्तैदी दिखाई, तो तृणमूल या रणनीति बनाने वाली बाहरी एजेंसियों (IPAC) को किसी भी प्रकार की हेराफेरी का मौका नहीं मिलेगा।

सत्ता विरोधी लहर का स्वरूप इस बार अत्यंत सूक्ष्म, लेकिन अत्यंत मारक है। महिलाओं का वह बड़ा वर्ग, जो कभी एकमुश्त सत्ताधारी दल की योजनाओं का समर्थक माना जाता था, अब अपनी सुरक्षा और आत्मनिर्भरता के भविष्य को लेकर नए विकल्प की ओर टकटकी लगाए हुए हैं। संदेशखाली जैसी घटनाओं ने महिला सुरक्षा के मुद्दे को चुनावी केंद्र में ला खड़ा किया है। प्रधान मंत्री की व्यक्तिगत विश्वसनीयता और भाजपा की सांगठनिक सक्रियता ने जनता के मन में यह विश्वास पैदा किया है कि 'आसोल पोरिबोर्तन' अब केवल एक चुनावी नारा नहीं बल्कि एक अवश्यम्भावी वास्तविकता है। बूथ स्तर पर जो सक्रियता देखी गई है, वह संकेत दे रही है कि आम मतदाता अब अपने मत की रक्षा के लिए स्वयं भी तैयार है। मतगणना प्रक्रिया को लेकर चुनाव आयोग की कठोरता यह सुनिश्चित कर रही है कि जनमत का अपहरण न हो सके। सत्ता के गलियारों में यह स्पष्ट संदेश जा चुका है कि यदि काउंटिंग के दौरान पिछले अनुभवों की पुनरावृत्ति नहीं हुई तो पश्चिम बंगाल में सत्ता का परिवर्तन अब केवल समय की बात है।

स्वाधीनता के बाद यह पश्चिम बंगाल का पहला चुनाव है जिसमें किसी की चुनावी हिंसा में हत्या नहीं हुई। इस चुनाव का परिणाम भी केवल हार-जीत का आंकड़ा नहीं होगा बल्कि यह भारतीय राजनीति के इतिहास में एक ऐसा मोड़ होगा जहां पश्चिम बंगाल अपनी खोई हुई सांस्कृतिक और आर्थिक गरिमा को पुनः प्राप्त करने की ओर कदम बढ़ाएगा।

जो लोग इस प्रदेश को केवल राजनीतिक प्रयोगों की भूमि मानते थे, उन्हें अब यह स्वीकार करना होगा कि जनता विकास और सुशासन की भूखी है। बूथों पर लम्बी कतारें, युवाओं का जोश और निष्पक्ष मतगणना के प्रति चुनाव आयोग की प्रतिबद्धता मिलकर एक ऐसी तस्वीर बना रहे हैं जिसमें भाजपा की सरकार का बनना तय दिख रहा है। यह जनादेश एक नई सीख होगा कि जनता की आकांक्षाओं को दबाना अब सम्भव नहीं है। यदि वोट की गिनती सही हुई और काउंटिंग एजेंटों ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई, तो 'खेला' करने वालों का खेल इस बार समाप्त होना निश्चित है।

✦✦✦

गुजरात की सभी 6 नगर निगमों में भाजपा ने कुल 572 में से 483 सीटें जीतकर सबसे बड़ा ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया है। गुजरात नगर निगम चुनाव का यह परिणाम एक मजबूत संकेत माना जा रहा है- जहां भाजपा की लहर स्थाई है और विपक्ष शहरी आधार को चुनौती देने में पूरी तरह नाकाम रहा।

गुजरात नगर निगम में भाजपा की ऐतिहासिक विजय

गुजरात नगर निगम, पंचायत तथा पालिका चुनावों ने आगामी विधानसभा चुनावों से पहले गुजरात में भारतीय जनता पार्टी का दबदबा बना रहने का स्पष्ट संकेत दे दिया है। भाजपा ने अहमदाबाद, सूरत, बडोदरा, राजकोट समेत सभी 15 नगर निगमों व 34 जिला पंचायत में अपना नियंत्रण स्थाई रखा। जिला पंचायत, नगर पालिका व तहसील पंचायत में 90 प्रतिशत से भी अधिक सीटों पर कमल खिला है।

भाजपा ने मोरबी व पोरबंदर मनपा में क्लीन स्वीप किया है। अहमदाबाद में एआईएमआईएम का भी सफाया हो गया और आप का प्रदर्शन भी बहुत ही निराशाजनक रहा। अभी नए बने नगर निगम नवसारी, गांधीधाम, मोरबी, वापी, आनंद, नडियाद, मेहसाणा, पोरबंदर और सुरेंद्रनगर में भी भाजपा का कमल खिल गया। गुजरात में भाजपा की यह जीत इसलिए भी बड़ी हो गई है क्योंकि इस बार प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी व गृह मंत्री अमित शाह चुनाव प्रचार के परिदृश्य में शामिल नहीं हुए। मुख्य मंत्री भूपेंद्र पटेल व भाजपा अध्यक्ष जगदीश विश्वकर्मा की जोड़ी का यह पहला चुनाव था। इन चुनाव परिणामों से भाजपा नेतृत्व को बहुत ही राहत का अनुभव हुआ है। इसका एक कारण नई पीढ़ी का धीरे-धीरे सक्षम होना और स्थानीय चुनावों का नेतृत्व करने का सामर्थ्य जुटा लेना भी है। यदि दूसरी पंक्ति का नेतृत्व चुनावी रणनीति में निपुण होगा तो भाजपा का विजय रथ ऐसे ही आगे बढ़ता जाएगा। विगत वर्षों से गुजरात में आप और कांग्रेस ने सक्रियता दिखाई है और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह दल भाजपा के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में कुछ सीमा तक सफल हो रहे हैं, परंतु गुजरात की जनता ने एक बार फिर लिख कर दे दिया है कि वहां अभी भाजपा का गढ़ हिलाने के लिए कांग्रेस, आप व अन्य दलों को बहुत पसीना बहाना होगा। सूरत नगर निगम में आप जैसे दलों का सफाया हो जाना इस बात का प्रमाण है कि वहां अब भी हिंदुत्व की विचारधारा की जड़ें मजबूत हैं। मतदान के कुछ दिन पूर्व ही एक मुस्लिम ने नाबालिग हिंदू बालिका के साथ छेड़खानी की थी जिससे आक्रोशित होकर सूरत का हिंदू समाज सड़कों पर उतर आया था। यही हिंदू मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति के विरोध में भी खड़ा हुआ। गुजरात में आप की हालत खस्ता होने के पीछे एक बड़ा कारण आप के सात राज्यसभा सांसदों का भाजपा में शामिल होना भी रहा।

गुजरात में मिली इस अपार सफलता पर भाजपा के राज्य नेताओं ने कहा कि यह विकास की राजनीति की जीत है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश लगातार आगे बढ़ रहा है। गुजरात की छवि को खराब करने वाले कांग्रेस और आप को अपना बोरिया बिस्तर समेट लेना चाहिए। इन पारिणामों ने साफ कर दिया है कि गुजरात राज्य में भाजपा की पकड़ शहरों से लेकर गांवों तक बनी हुई है। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी दोनों ही राज्य में नैरेटिव की लड़ाई भाजपा से हार गई। इन परिणामों ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि भाजपा सतर्क और सचेष्ट रही तो राज्य में वर्ष 2027 का विधान सभा चुनाव भी आसानी से निकाल लेगी।

मृत्युंजय दीक्षित

✦✦✦

जिहाद

जिहादी मानसिकता से लड़ने का सबसे बड़ा हथियार परिवार और पड़ोस की निगरानी है- हर नागरिक को यह समझना होगा कि आतंकी पैदा नहीं होता, बनाया जाता है; उसे समय रहते रोकना ही सबसे बड़ा समाधान है।

लोन वुल्फ आतंक का बढ़ता संकट

हाल ही में मीरा रोड (मुंबई) में एक व्यक्ति द्वारा की गई हिंसक घटना ने सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ा दी है। यह घटना केवल एक आपराधिक मामला नहीं, बल्कि 'लोन वुल्फ' (अकेला भेड़िया) आतंकी मानसिकता का सजीता उदाहरण है, जिसकी गूंज जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हमले से मिलती है।

घटना का क्रम: धर्म पूछताछ से हमला तक

मीरा रोड के आरोपी ने सबसे पहले पीड़ित से उसका धर्म पूछा। पुष्टि होने के बाद ही उसने हमला किया। यह तरीका पहलगाम (2022) में यात्रियों पर चुनिंदा हमले की रणनीति से मेल खाता है। यह सीधा समानांतर दर्शाता है कि 'पहचान-आधारित हिंसा' अब एक पैटर्न बन चुकी है, जहां हमलावर पहले लक्ष्य की पहचान करता है, फिर हमला करता है।

'लोन वुल्फ' की मानसिकता

लोन वुल्फ वह व्यक्ति होता है जो किसी बड़े आतंकी संगठन से प्रत्यक्ष सम्पर्क न रखते हुए, ऑनलाइन कट्टरपंथी विचारधारा से प्रभावित होकर हिंसक कदम उठाता है। सोशल मीडिया, टेलीग्राम चैनल्स और यूट्यूब पर मौजूद उत्तेजक सामग्री उसे 'जिहादी मानसिकता' से भर देती है। सामाजिक रूप से अलग-थलग ये लोग किसी फिदायीन की तरह अचानक वार करते हैं, जिससे रोकथाम और भी मुश्किल हो जाती है। अत: साइबर स्पेस पर निगरानी बढ़ाने के साथ-साथ व्हाट्सएप, टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स पर उग्रवादी चैनलों को तत्काल बंद करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए- क्योंकि 90% लोन वुल्फ हमले ऑनलाइन कट्टरपंथ के परिणाम होते हैं।

जांच एजेंसियों का रुख

महाराष्ट्र एटीएस ने मामले की जांच में पाया कि आरोपी ने पाकिस्तान स्थित कट्टरपंथी वेबसाइटों तक पहुंच बनाई थी। हालांकि अब तक किसी संगठन से सीधे सम्पर्क का सबूत नहीं मिला है, लेकिन यह चिंता का विषय है कि 'वर्चुअल रेडिकलाइजेशन' इतना गहरा हो चुका है कि एक आम व्यक्ति आतंकी बन जाता है। एजेंसियां इस प्रकरण को पहलगाम और राजौरा हमलों की श्रृंखला में रखकर देख रही हैं।

बड़ी चिंता का विषय

सबसे गम्भीर संकट यह है कि पारम्परिक खुफिया तंत्र लोन वुल्फ पर दृष्टि रखने में प्राय: विफल हो जाता है। इनके पास न तो कोई हैंडलर होता है और न ही नकली दस्तावेज, इसलिए ये रडार पर नहीं आते। मीरा रोड की घटना एक 'ब्लूप्रिंट' बन सकती है, जहां हर अलग-थलग कट्टरपंथी खून बहाने के लिए उतारू हो जाए। मीरा रोड की घटना केवल एक व्यक्ति का जघन्य कृत्य नहीं है, यह वैश्विक जिहादी मानसिकता के घुसपैठ की बड़ी चेतावनी है। यह दर्शाता है कि एक ऑनलाइन कट्टरपंथ से प्रभावित, सामाजिक रूप से अलग-थलग व्यक्ति कैसे पहलगाम की पुनरावृत्ति कर सकता है। यह न सिर्फ धार्मिक सद्भाव पर हमला है बल्कि हमारी नागरिक सुरक्षा व्यवस्था में एक गम्भीर सेंध है। समय की मांग है कि सोशल मीडिया पर निगरानी बढ़ाई जाए और समुदाय-स्तर पर ऐसे उग्रवादी तत्वों की पहचान की जाए। बिना प्रत्येक नागरिक की सतर्कता के, लोन वुल्फ का यह संकट कभी भी कहीं भी विकराल रूप ले सकता है। मिरा रोड की इस घटना ने समाज को झकझोर कर रख दिया है। हिंदू समाज लगातार निशाने पर है और डरा हुआ है। देश के हर हिस्से में लगातार इस तरह की जिहादी घटनाएं लगातार हो रही है। जो डर का माहौल पैदा करता है। प्रश्न यह है कि मजहब की आड़ में इस तरह की हिंसा के पीछे एक ही समुदाय का नाम क्यों आता है। जब हिंसा का कोई धर्म नहीं होता तो हर हिंसा के पीछे इस्लाम धर्म के मानने वाले ही क्यों होते हैं?

अमित तिवारी

✦✦✦

न्याय की 'होम डिलीवरी'

न्यायपालिका के सम्मान और उसके आदेशों की पालन का जमाना अब पुराना हो गया। अब एक नया प्रयोग चल रहा है- न्याय की डिलीवरी भी 'जैसे चाहो वैसे'। क्यों जाएं न्यायालय? न्यायालय को चाहिए कि वह स्वयं चलकर आए, वह भी पार्टी कार्यालय, गली-चौराहे या फिर 'झुग्गी-झोपड़ी' तक। आखिर 'आम आदमी' का न्याय तो 'आम आदमी' के दरवाजे पर ही होना चाहिए, न कि किसे ऊंचे न्यायालयों की ठंडी बेंचों पर।

ताजा वाकया यह है कि अरविंद केजरीवाल- जो दिल्ली के पूर्व मुख्य मंत्री, एक बड़े नेता और एक 'प्रहरी' भी रहे हैं- ने एक मामले में साफ कर दिया कि न तो वह स्वयं पेश होंगे, न उनकी ओर से कोई वकील आएगा।

जब 'न्यायिक अवमानना' बदलकर 'लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति' बन गई कभी न्यायालय के एक आदेश की अवमानना का मतलब था- जेल या भारी जुर्माना, पर अब 'न्यायिक अवमानना' शब्दकोष से हटकर 'लोकतंत्र की चौथी मंजिल' का हिस्सा बन चुका है। असल में यह कोई जुर्म ही नहीं रहा, यह तो एक 'टीआरपी बूस्टर युक्त प्रदर्शन' हो गया है। कोई भी नेता अब यह कह सकता है- न्यायाधीश साहब, आपका आदेश मानने से तो मेरे वोटरों में मेरी 'छवि गिर जाएगी', इसलिए न मानूंगा। आप ही समझौता कर लीजिए। यदि कोई पूछे कि क्या यह अराजकता नहीं है? तो उत्तर होगा - नहीं साहब, यह 'नया नॉर्म' है। पहले लोग न्यायालय के आदेश पर खड़े हो जाते थे, अब न्यायालय को चाहिए कि वह नेता के समय और स्थान के अनुसार सम्मन या सुनवाई करे। तो फिर क्यों न न्यायाधीश स्वयं 'आप' कार्यालय के बाहर चाय-पानी के साथ तख्त लगाकर बैठें? क्योंकि 'आम आदमी' को 'होम डिलीवरी' चाहिए।

मुकेश गुप्ता

व्यवस्था नहीं, 'प्रदर्शन कला'

यदि ध्यान दें तो पता चलेगा कि अब न्यायिक प्रक्रिया से ज्यादा आवश्यक हो गया है- 'प्रदर्शन करना'। न्यायालय में पेश न होना एक नई रणनीति है। इससे जनता यह सोचती है कि वाह, कितने बेबाक नेता हैं, जो सत्ता को चुनौती दे रहे हैं। भले ही वह 'सत्ता' न्यायालय की ही क्यों न हो। एक ओर से यह नाटक बहुत ही सस्ता और कारगर है क्योंकि यदि नेता न्यायालय पहुंचता, तो वह वहां अपनी 'विनम्रता' दिखाता, जो उसके 'विद्रोही' अवतार को कमजोर करती।

आखिर किसकी अवमानना?

किसी ने बुद्धिमानी से कहा है कि अवमानना का खेल दो तरफा होता है। एक ओर अदालत की अवमानना, दूसरी ओर न्याय की अवमानना, किंतु अब तो यह नेता यह संदेश देते दिखाई देते हैं कि न्यायालय को अपनी न्यायालय की 'हदों' में रहना चाहिए, न कि हमारी राजनीति की 'सीमाओं' में दखल देना चाहिए।

आखिर क्यों न हो 'पोर्टेबल कोर्ट'?

इस समस्या के समाधान के लिए मैं एक सुझाव देना चाहता हूं- 'मोबाइल कोर्ट' या 'पोर्टेबल कोर्ट'। और हां, यह मोबाइल कोर्ट 'जनता का कोर्ट' कहलाएगा।

सार - हंसी या चिंता?

व्यंग्य तो हंसी के लिए होता है, पर यह मामला उतना हंसाने वाला नहीं जितना सोचने वाला है। न्यायालय के आदेशों की अनदेखी करना, न वकील भेजना, न स्वयं पेश होना- यह किसी लोकतंत्र में सामान्य प्रक्रिया नहीं हो सकती। जब व्यवस्था ही 'अनदेखी' करने लगे, तो फिर वहां अराजकता ही न्याय बन जाती है। यदि एक नेता यह कर सकता है, तो कल कोई और क्यों नहीं कर सकता? फिर चाहे वह कोई और राजनेता हो या कोई बड़ा उद्योगपति या फिर अपराधी।

न्याय की 'होम डिलीवरी' एक व्यंग्य भर है, परंतु इसके पीछे का गम्भीर संदेश यह है कि- 'मैं व्यवस्था से ऊपर हूं' और जब व्यवस्था से ऊपर कोई हो जाता है, तो लोकतंत्र बस एक दिखावा मात्र रह जाता है। बाकी, न्यायमूर्ति महोदय- अब आपको तय करना है कि क्या सचमुच 'आप' कार्यालय जाना है या फिर से 'अवमानना' शब्द का असली अर्थ समझाने का समय आ गया है।

✦✦✦

क्रिकेट का अंतिम रोमांचक मुकाबला

आईपीएल का यह अंतिम चरण न सिर्फ चारों टीमों के लिए खिताब की लड़ाई है बल्कि करोड़ों दर्शकों के लिए रोमांच, उत्साह और रोमांच हार्मोन (एड्रेनालाईन) का वह तूफान है, जिसकी बेसब्री से प्रतीक्षा पूरे एक साल से की जा रही है।

राजीव रोहित

इस बार का आईपीएल अपने अंतिम रोमांचक दौर में प्रवेश कर चुका है। 28 मार्च को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और सनराईजर्स हैदराबाद के बीच इसका पहला मैच खेला गया था। तब से लेकर अब तक (इन पंक्तियों के लिखे जाने तक) 42 मैचों में लाखों-करोड़ों में खेलनेवाले खिलाड़ी अपनी-अपनी टीमों की जीत के लिए जी-जान लगाते दिखाई दे रहे हैं।

इस बार पिछले 19 सीजन में 13 टाइटल जीतने वाली तीन टीमों चेन्नई सुपर किंग्स (5), मुंबई इंडियंस (5) और कोलकाता नाइट राइडर्स (3) पर सबसे अधिक उम्मीदें थी। ये अभी तक अपना बेहतरीन प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं। इनके लिए जीत के द्वार पूरी तरह नहीं खुल पा रहे हैं। अन्य टीमों पंजाब किंग्स, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, सनराइजर्स हैदराबाद, गुजरात टाईटंस, दिल्ली कैपीटल्स, लखनऊ सुपर जायंट्स और राजस्थान रॉयल्स जैसी टीमों के प्रदर्शन को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। सभी टीमें जीतने का ठोस आधार तैयार करने के लिए 6 ओवर के पावर प्ले में ही बड़े स्कोर खड़ा करना चाहती हैं या फिर कम से कम तीन से चार विकेट निकालकर मैच जीतना चाहती हैं। यह अप्रोच इसलिए भी दिखाई दे रहा है कि कुछ टीमों में ऐसे युवा मास्टर ब्लास्टर हैं जो बिलकुल परवाह नहीं करते कि सामनेवाला कितना बड़ा अंतरराष्ट्रीय गेंदबाज है। वैसे तो बल्लेबाजों का दबदबा टी-20 आईपीएल टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा देखने को मिलता है।

पिछले सीजन (2025) में 200 से ऊपर के 52 टोटल बने थे। इस बात की पूरी-पूरी सम्भावना है कि इस बार 2026 का सीजन इस टोटल से बहुत आगे निकल जाएगा। किसी भी क्रिकेट प्रेमी के लिए यह आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि वो स्कोर बोर्ड पर 300 का टोटल देखने का आनंद और रोमांच प्राप्त करे। इस बार भी आईपीएल के टीमों की महत्वाकांक्षाओं की पराकाष्ठा देखते ही बनती है। किसी भी मैच के परिणाम के बाद आप प्रशंसकों, टीम मालिकों और खिलाड़ियों के चेहरे देख लीजिए। आप को उनकी आंखों में दिखाई देगा कि उनके द्वारा या तो एक अघोषित युद्ध जीता जा चुका है या फिर वो जबर्दस्त निराशा और पराजय का शिकार हुए हैं। उनकी शारिरीक भाषा देखकर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अपने देश के लिए साथ-साथ खेलते हुए और लीग के लिए एक-दूसरे के विरुद्ध खेलते हुए इनके आपसी व्यवहार में कितना अंतर है?

परम्परागत रूप से इस आईपीएल में भी प्रत्येक टीम के कप्तान और खिलाड़ी यह दर्शाने का प्रयास कर रहे हैं कि वे कितने पेशेवर तरीके से क्रिकेट खेलना चाहते हैं। यह तो तय है कि यह सीजन अपनी जबरदस्त दिलेरी के लिए भी एक नई पहचान बनाएगी। यह पहचान बने भी क्यों न, जब वैभव सूर्यवंशी जैसा 15 वर्षीय बालक किसी भी फायर ब्रांड गेंदबाज को छक्का मारने की प्रबल इच्छा लेकर हरे-भरे मैदान और भरे-पुरे स्टेडियम में विरोधी टीमों के प्रशंसकों और उनके मालिकों का दिल तोड़ने के लिए उतरता हो। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक प्राय: प्रथम पांच में रहने वाली टीमें यथा चेन्नई सुपर किंग्स, दिल्ली कैपीटल्स, कोलकाता नाईटराईडर्स, मुंबई इंडियंस और लखनऊ सुपर जायंट्स अपने 8 मैचों में केवल 2 या 3 मैच जीतकर अंतिम पांच स्थानों पर हैं।

✦✦✦

इस क्षेत्र का सबसे बड़ा आकर्षण है इसकी आकर्षक वेतन संरचना और करियर ग्रोथ। शुरुआती स्तर पर ही मर्चेंट नेवी के कर्मचारी अच्छा वेतन प्राप्त करते हैं, जो अनुभव और पद के अनुसार तेजी से बढ़ता है। इसके अलावा इस पेशे में टैक्स में छूट, विदेशी मुद्रा में आय और लम्बी छुट्टियों का लाभ भी मिलता है।

मर्चेंट नेवी साहसिक करियर

अगर आप मर्चेंट नेवी में करियर बनाना चाहते हैं तो सिर्फ इच्छा काफी नहीं होती– इसके लिए कुछ खास योग्यता, तैयारी और प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। सीधा और साफ तरीके से समझिए कि आपको क्या–क्या करना चाहिए।सबसे पहले बात आती है शैक्षणिक योग्यता की। मर्चेंट नेवी में जाने के लिए आपको 12वीं कक्षा Physics, Chemistry और Mathematics (PCM) के साथ पास करनी होती है। आमतौर पर कम से कम 50–60% अंक आवश्यक होते हैं, साथ ही अंग्रेजी में भी अच्छे अंक होने चाहिए क्योंकि पूरा कामकाज अंग्रेजी में होता है।

इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण है कोर्स और ट्रेनिंग। आप सीधे जहाज पर नौकरी नहीं कर सकते, पहले आपको मान्यता प्राप्त संस्थान से कोर्स करना होता है। इसके लिए आप Diploma in Nautical Science (DNS), B.Sc Nautical Science या Marine Engineering जैसे कोर्स कर सकते हैं। ये कोर्स आपको जहाज पर काम करने के लिए तकनीकी और प्रैक्टिकल ज्ञान देते हैं।

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू है मेडिकल फिटनेस। मर्चेंट नेवी में जाने के लिए आपका शारीरिक रूप से पूरी तरह फिट होना आवश्यक है। आपकी आंखों की रोशनी अच्छी होनी चाहिए (आमतौर पर 6/6 vision), कोई गम्भीर बीमारी नहीं होनी चाहिए और रंग पहचानने की क्षमता सही होनी चाहिए। इसके लिए DG Shipping द्वारा मान्यता प्राप्त डॉक्टर से मेडिकल टेस्ट होता है। इसके बाद आता है एंट्रेंस और चयन प्रक्रिया। कई अच्छे संस्थानों में एडमिशन के लिए एंट्रेंस एग्जाम या इंटरव्यू देना पड़ता है। कुछ कोर्स जैसे DNS के लिए आपको स्पॉन्सरशिप भी चाहिए होती है, यानी पहले से किसी शिपिंग कंपनी का चयन। इसके साथ ही आवश्यक है कुछ स्किल्स (कौशल) का होना। मर्चेंट नेवी में काम आसान नहीं होता, इसलिए आपके अंदर अनुशासन, धैर्य, टीमवर्क और मानसिक मजबूती होनी चाहिए। लम्बे समय तक घर से दूर रहना पड़ता है, इसलिए मानसिक रूप से मजबूत होना बहुत आवश्यक है।

अब बात करते हैं डॉक्यूमेंट्स और लाइसेंस की। कोर्स पूरा करने के बाद आपको CDC (Continuous Discharge Certificate) बनवाना होता है, जो समुद्री कर्मचारियों का पहचान पत्र होता है। इसके बाद ट्रेनिंग और अनुभव के आधार पर आप धीरे–धीरे प्रमोशन पाते हैं– जैसे कैडेट से ऑफिसर और फिर कप्तान या चीफ इंजीनियर तक।

अंत में, एक आवश्यक बात– आपको सही और मान्यता प्राप्त इंस्टीट्यूट ही चुनना चाहिए। भारत में DG Shipping (Directorate General of Shipping) द्वारा अप्रूव्ड संस्थान से ही कोर्स करें, नहीं तो आपका करियर संकट में पड़ सकता है। संक्षेप में कहें तो मर्चेंट नेवी में जाने के लिए आपको सही पढ़ाई, सही ट्रेनिंग, अच्छी फिटनेस और मजबूत मानसिकता की आवश्यकता होती है। यदि आपके अंदर समुद्र के साथ जीवन जीने का जुनून है, तो यह करियर आपको ऊंचाई और दुनिया दोनों दिखा सकता है।

सोनाली जाधव

✦✦✦

मुस्कान का अनमोल उपहार

आज की भागदौड़ भरे जीवन में लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे खुलकर हंसना भूल चुके हैं। कार्यस्थल पर तनाव, घरेलू जिम्मेदारियां और सामाजिक दबाव के वातावरण में जीवन के रंगीन पलों को जीना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि लक्ष्यों को प्राप्त करना।

डॉ. नीलम दुबे

आज के प्रतिस्पर्धी युग में हम ऐसे समाज में रह रहे हैं जहां हम सभी एक दूसरे से आगे निकल जाने की होड़ में लगे हुए हैं। परिणामतः तनाव, चिंता एवं अवसाद जैसे मानसिक रोग हम अपने आने वाली पीढ़ी के भविष्य में भी इन्हीं गुणों का बीज रोपते हैं। हमेशा अपने बच्चों को प्रतिस्पर्धा करना सिखाते हैं। प्रतिस्पर्धा बुरी बात नहीं है, परंतु प्रतिस्पर्धा में विजेता सिर्फ एक होता है तो उसकी विजय का जश्न सभी को मनाना चाहिए, ना कि अपनी प्रत्येक हार पर कुंठित व तनावग्रस्त होना चाहिए। हमें इस दूषित प्रणाली को समाप्त कर बच्चों को बताना चाहिए कि प्रतिस्पर्धा में विजयी होना आवश्यक नहीं बल्कि आवश्यक है खुश रहना। शरीर और मस्तिष्क दोनों का स्वस्थ रहना ज्यादा अनिवार्य है।

जिस प्रकार शरीर की अस्वस्थता में दवा कारगर होती है, उसी प्रकार मन की अस्वस्थता की औषधि हंसी है। हंसी को योग भी माना गया है। हंसी सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अनिवार्य है। इसीलिए डॉक्टर मदन कटारिया द्वारा विश्व लाफ्टर डे की शुरुआत की गई, जो मई के प्रथम रविवार को मनाया जाता है।

मदन जी लाफ्टर योग के जनक माने जाते हैं। उन्होंने सिद्ध किया कि कृत्रिम हंसी भी धीरे-धीरे वास्तविक आनंद में बदल जाती है और मानसिक स्वास्थ्य को सुधुन करती है। मुंबई में आयोजित पहले कार्यक्रम में हजारों लोगों ने सामूहिक हंसी के माध्यम से एक नई पहल की शुरुआत की। धीरे-धीरे यह पूरे विश्व में फैल गया और आज सभी लोग उत्साहपूर्वक विश्व हंसी दिवस मनाते हैं। अनेक शोधों द्वारा पता चलता है कि हंसना केवल मानसिक नहीं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी बेहतर है। जब हम हंसते हैं तो हमारे शरीर में एंड्रोफिन हार्मोन स्रावित होता है जो तनाव को कम कर रक्त संचार हृदय व प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है। हमें प्रकृति से सीखना चाहिए कि वह हर विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक से जोड़ नवनिर्माण कर देती है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अपने निबंध 'शिरीष के फूल' में कहते हैं कि भीषण गर्मी में शिरीष का पेड़ फूलों से लदा रहता है। शिरीष के फूल से सीखना है कि जीवन में कितनी भी कठिनाई क्यों ना हो, हार नहीं माननी चाहिए, सदैव हंसते-मुस्कुराते रहना चाहिए। वैसे भी कहते हैं कि 'चिंता, चिता समान है' तो भरपूर हंसे व जी भर जिए। जीवन के हर पल को सकारात्मक के साथ देखें। आनंद ले और छोटी-छोटी चीजों में खुशियां देखें। इस दिन को मनाने के लिए विशेष आयोजन किए जाते हैं- हंसी योग सत्र, स्टैंड-अप कॉमेडी शो और समूह हंसी के कार्यक्रम। लोग जानबूझकर हंसने का अभ्यास करते हैं क्योंकि शोध कहते हैं कि शरीर कृत्रिम और वास्तविक हंसी में अंतर नहीं करता- दोनों ही लाभदायक होते हैं। हम सभी को अपने दैनिक जीवन में हास्य को शामिल करने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों जैसी मासूम हंसी, दोस्तों के साथ ठहाके, या किसी अच्छे चुटकुले पर खिलखिलाहट- यही वे छोटे-छोटे क्षण हैं जो जीवन को सुंदर और स्वस्थ बनाते हैं। तो आइए, इस विश्व हंसी दिवस पर संकल्प लें कि हम न सिर्फ स्वयं प्रसन्न रहेंगे बल्कि दूसरों के चेहरे पर भी मुस्कान बिखेरेंगे। आखिर हंसी वह सस्ती और सुलभ औषधि है जो दवा की दुकान पर नहीं बल्कि हमारे दिल में उपस्थित है।

✦✦✦

खेल भावना, अनुशासन और राष्ट्र निर्माण का उत्सव

आइए इस एथलेटिक्स डे पर हम संकल्प लें: हर सुबह एक नई उम्मीद के साथ दौड़ें, हर बाधा को एक चुनौती समझकर लांघें और अपने जीवन के इवेंट में हमेशा 'एथलीट की तरह फिट' रहें। यही एथलेटिक्स का सच्चा उत्सव है।

प्रत्येक वर्ष, एथलेटिक्स डे हमें उस ऊर्जा, जुनून और समर्पण का स्मरण कराता है जो खेल हमारे जीवन में लाते हैं। यह दिन केवल दौड़ने, कूदने या फेंकने का प्रदर्शन मात्र नहीं है बल्कि यह मानवीय इच्छाशक्ति, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम है। एथलेटिक्स, जिसे खेलों की रानी कहा जाता है, सबसे प्राचीन और शुद्ध खेल शैली है, जहां प्रतियोगी अपनी शारीरिक और मानसिक सीमाओं को चुनौती देता है। एथलेटिक्स डे का उद्देश्य केवल प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना नहीं है बल्कि युवा पीढ़ी को अनुशासन, समयनिष्ठा और टीम भावना का पाठ पढ़ाना है। जब एक एथलीट सुबह-सुबह अभ्यास के लिए उठता है, जब वह बार-बार असफल होने के बाद भी उठकर फिर प्रयास करता है, तब वह जीवन का सबसे बड़ा सबक सीखता है- 'हार स्वीकार करो, परंतु हार मत मानो।' स्कूलों और कॉलेजों में आयोजित होने वाली एथलेटिक्स स्पर्धाएं एक छात्र के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भाग लेने से आत्मविश्वास बढ़ता है, नेतृत्व के गुण पनपते हैं और शारीरिक फिटनेस बनी रहती है। भारत के संदर्भ में एथलेटिक्स ने हाल के वर्षों में जबरदस्त उपलब्धियां देखी हैं। जिसे कभी क्रिकेट का गुलाम कहा जाता था, उसने ओलम्पिक, एशियाड और राष्ट्रमंडल खेलों में ऐतिहासिक पदक जीतकर नया इतिहास रचा है। नीरज चोपड़ा का भाला फेंक में स्वर्ण पदक, हिमा दास की तेज रफ्तार, या पी. टी. उषा जैसे दिग्गजों का योगदान- ये सभी दर्शाते हैं कि यदि सही मंच और प्रोत्साहन मिले तो भारतीय एथलीट विश्व स्तर पर गौरवान्वित कर सकते हैं। एथलेटिक्स डे उन्हीं अज्ञात नायकों- ग्रामीण क्षेत्रों के वो बच्चे जो सड़कों पर नंगे पैर दौड़ते हैं, वो कोच जो सुविधाओं के अभाव में भी मेडल जिताने का जुनून रखते हैं- को सम्मान देने का दिन है। इस दिन की एक और महत्वपूर्ण प्रासंगिकता बढ़ती गतिहीन जीवनशैली के दौर में संदेश देना है कि 'शरीर ही असली मंदिर है।' आज के डिजिटल युग में बच्चे, बड़े, सब मोबाइल और स्क्रीन में कैद हैं। मोटापा, मधुमेह और मानसिक तनाव जैसी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। एथलेटिक्स डे हमें याद दिलाता है कि दौड़ना, कूदना या खेलना कोई विशेष सुविधा नहीं बल्कि जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। एक साधारण सी सुबह की सैर या सप्ताह में 3 बार रनिंग ट्रैक पर दौड़ना, शरीर को ही नहीं बल्कि मन को भी फुर्तीला बनाता है। भारत सरकार और विभिन्न खेल संस्थाओं ने 'खेलो इंडिया' जैसी योजनाओं के माध्यम से एथलेटिक्स को बढ़ावा देने की दिशा में सराहनीय कार्य किए हैं, परंतु बदलाव तभी होगा जब यह पर्व सिर्फ विद्यालय में 'फंक्शन' न रहकर, समाज का 'व्यवहार' बन जाए। माता-पिता को अपने बच्चों को दौड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए, शिक्षकों को अतिरिक्त कक्षा के बजाए खेल अवधि को प्राथमिकता देनी चाहिए और स्थानीय प्रशासन को पार्कों और खेल के मैदानों को सुरक्षित बनाना चाहिए। अंततः एथलेटिक्स डे केवल पदक या रिकॉर्ड के बारे में नहीं है। यह 'महान खेल भावना' के बारे में है। यह सिखाता है कि कैसे जीतना है- तो गर्व से, पर हारना है तो मुस्कुराकर। यह सिखाता है कि दौड़ में जीतने वाला केवल एक होता है, लेकिन हर वह व्यक्ति विजेता है जिसने स्टार्टिंग लाइन पर खड़े होने का साहस किया। ✦✦✦

महेश पालीवाल

जन्मदिन विशेष (07 मई)

रवींद्रनाथ टैगोर केवल एक कवि नहीं बल्कि भारतीय पुनर्जागरण के वह सूर्य थे, जिन्होंने साहित्य, संगीत, चित्रकला और शिक्षा के हर क्षेत्र को अपनी प्रतिभा से आलोकित किया। वे एक दूरदर्शी विचारक, स्वतंत्रता सेनानी और मानवतावादी भी थे।

रवींद्रनाथ टैगोर

विश्वमानव की अमर वाणी

पच्चीस बैशाख, बंगाली कैलेंडर का वह पावन दिन जब साहित्य, संगीत और दर्शन के क्षितिज पर एक बहुआयामी प्रतिभा का उदय हुआ। 7 मई, 1861 (कुछ मान्यताओं में 9 मई) को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुरबाड़ी में जन्मे रवींद्रनाथ टैगोर न सिर्फ भारत के बल्कि विश्व के महानतम साहित्यकारों में गिने जाते हैं। उनका जन्मदिन हमें मानवीय चेतना, प्रकृति प्रेम और विश्वबंधुत्व के उस अद्भुत साहित्य से साक्षात्कार कराता है जिसने राष्ट्रों की सीमाएं तोड़ दीं। रवींद्रनाथ टैगोर केवल एक कवि नहीं थे, वह एक पूरा विश्व विद्यालय थे। कवि, गीतकार, नाटककार, उपन्यासकार, चित्रकार, दार्शनिक, शिक्षाविद और राष्ट्र चिंतक- उनके व्यक्तित्व के इतने आयाम थे कि उन्हें किसी एक परिभाषा में बांध पाना असम्भव है। उनकी सर्वाधिक चर्चित कृति 'गीतांजलि' (गीतों की अर्पण) के लिए 1913 में उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। यह एशिया में प्रथम और अद्वितीय सम्मान था, जिसने पूर्वी साहित्य की गरिमा को वैश्विक मंच दिया। उस समय अंग्रेजों के शासन में जकड़ा भारत गर्व से फूला नहीं समाया।

टैगोर का साहित्य यूं तो असीम है, परंतु उनकी कुछ रचनाएं आज भी राष्ट्रीय चेतना का गौरवगान करती हैं। 'जन गण मन' हमारा राष्ट्रगान है तो बांग्लादेश का राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' भी उनकी अमर कृति है। उनकी कविताएं साधारण से लगने वाले विषयों- टूटा तारा, खिलता फूल, बहता जल, बरसात की बूंद - को अद्भुत दार्शनिक गहराई प्रदान करती हैं। 'जब सब सोता है, तब जागता है एकांत मन' जैसी पंक्तियां मानवीय अंतर्जगत की यात्रा कराती हैं। शांतिनिकेतन में उन्होंने विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की, जहां गुरुकुल आश्रम परम्परा और वैश्विक शिक्षा की अनोखी संगम देखने को मिलती थी। यह उनका सपना था कि शिक्षा में प्रकृति के साथ संवाद हो, कला और विज्ञान का मेल हो और पूरब-पश्चिम का द्वंद्व मिटकर विश्वबंधुत्व स्थापित हो। यही कारण है कि टैगोर को 'विश्वमानव' की संज्ञा प्राप्त है। टैगोर और राष्ट्रीय आंदोलन का सम्बंध बहुत गहरा, किंतु स्वतंत्र रहा। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन का समर्थन किया, पर अहिंसा पर अपने विचारों में गांधी जी से मतभेद भी रखा। अपने जीवन के राजनीतिक अनुभवों को उन्होंने उपन्यास 'घरे बाइरे' (घर और बाहर) में उतारा। उनकी साहित्य-साधना बांग्ला भाषा को अमरत्व प्रदान कर गई। 'गीतांजलि', 'गोरा', 'क्षणिका', 'बलाका', 'यूरोप प्रवासी पत्र', 'चार अध्याय', 'द टेल ऑफ इन किचन' उनकी अमर कृतियां हैं। उन्होंने बंगाली संगीत की अनूठी शैली 'रबींद्र संगीत' का निर्माण किया जो आज भी बंगाल की संस्कृति की धड़कन है। प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन से लेकर कवि येट्स तक, सभी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित थे। येट्स ने उनके बारे में लिखा, 'मैं उनकी कविता के सामने घुटने टेक देता हूं। 'टैगोर का जीवन दर्शन बहुत सादा, पर अत्यंत गूढ़ था। वे कहते थे, 'तुम अगर रास्ता नहीं पाते, तो रास्ता बनाओ।' वे 'मुक्ति' शब्द के बहुत बड़े समर्थक थे- मन की मुक्ति, चेतना की मुक्ति और पराधीन विचारों से मुक्ति। उन्होंने सदा प्रकृति में रहना, खुली हवा में सांस लेना और विश्व-परिवार की अवधारणा को अपनाने का संदेश दिया। आज जब विश्व संकटों, बंटवारे और असुरक्षा से गुजर रहा है, टैगोर की वाणी जहां मन भय से रहित हो, मस्तक ऊंचा हो, जहां ज्ञान मुक्त विकसित हो- पहले से अधिक प्रासंगिक हो गई है।

घनश्याम गुप्त

✦✦✦

TJSB SAHAKARI BANK LTD. MULTI-STATE SCHEDULED BANK

Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank

With low-interest rates and flexible terms, cruise in style while reducing your carbon footprint

Green Car Loan starting at 8.00%* p.a.

*T&C apply

www.tjsb.bank.in | ✆ : -022-48897204